This question paper contains 4+1 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5625**

Unique Paper Code : **205455** **E**

Name of the Paper : **Aadhunik Kavya**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारतेंदुयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए । 15

अथवा

नयी कविता की सामान्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए ।

2. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(*i*) 'यशोधरा' में आधुनिकता का स्वर झलकता है, स्पष्ट कीजिए ।

(*ii*) 'यशोधरा' में व्यक्त विरह-वर्णन पर विचार कीजिए ।

(*iii*) 'महाप्रस्थान' के काव्य-रूप का विवेचन कीजिए ।

(*iv*) 'महाप्रस्थान' एक समस्याप्रधान कृति है । स्पष्ट कीजिए ।

(*v*) 'कुरुक्षेत्र' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए ।

(*vi*) 'कुरुक्षेत्र' की भाषा-शैली पर विचार कीजिए ।

P.T.O.

3. किसी **एक** काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10

मेरा मरण तुमको खला ।

किन्तु मैं लेकर करूँ क्या विरह-जीवन जला ?

लौट आओ प्रिय, तुम्हारा पुण्य फूला-फला,

भाग जो जिसका उसे दो जाए क्यों वह छला ?

देख लूँ, जब तक जगूँ भव-नाट्य की नव कला

और फिर सोऊँ तुम्हारी बाँह पर धर गला ।

अथवा

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,

प्रियतम को, प्राणों के पण में,

हर्मी भेज देती हैं रण में,—

क्षात्र-धर्म के नाते ।

सखि वे मुझसे कह कर जाते ।

अथवा

नर की कीर्ति-ध्वजा उस दिन

कट गई देश में जड़ से,

नारी ने सुर को टेरा

जिस दिन निराश हो नर से ।

अथवा

सच पूछो, तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की ।
संधि-वचन सपूंज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की ।

अथवा

मैं तुम तक पहुँचना भी चाहती हूँ
पर महाराज !
हिम का यह ठण्डा पाश
प्रतिक्षण
अपने जैसा ही मुझे पाषाण कर देने पर
कृतसंकल्प है
व्यक्ति, वृक्ष इसी प्रकार बनता होगा महाराज ।

अथवा

भोजपत्रों की आरण्यकता
देवदारुओं की शालीन पंक्तियाँ
चीड़ के वे सुरम्य वन,
औषधियों वाली वनस्पति सम्पन्ना
वे माधवी वनानियाँ
तुम्हारी वेणी में
शोभित हो जाने को आकुल
वे आरक्त फूल ।

4. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×8=24

(*i*) 'अकाल' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

(*ii*) 'आँसू' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

(*iii*) 'वह तोड़ती पत्थर' का मूल स्वर बताइए ।

(*iv*) 'नौका विहार' में अभिव्यक्त प्रकृति सौंदर्य को रेखांकित कीजिए ।

(*v*) 'हिरोशिमा' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(*vi*) केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं के आधार पर उनकी काव्यात्मक विशेषताओं को बताइए ।

(*vii*) वीरेन्द्र मिश्र की कविता 'वापसी-2' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

5. किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7=14

(*i*) जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति-सी छाई ।
दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आई ॥
मेरे क्रंदन में बजती क्या वीणा जो सुनते हो ।
धागों से इन आँसू के निज करुणा-पट बुनते हो ॥

(*ii*) उस फैली हरियाली में,
कौन अकेली खेल रही माँ,
वह अपनी वय वाली में,
सजा हृदय की थाली में ।

(*iii*) कितनी दूरियों से कितनी बार,

कितनी डगमग नावों में बैठकर,

मैं तुम्हारी ओर आया हूँ ।

ओ मेरी छोटी-सी ज्योति ।

(*iv*) सजा सहज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार ।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर ।

ढुलक माथे से गिरे सीकर,

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा—

मैं तोड़ती पत्थर !

(*v*) लाता भर श्वासों का समीर,

जग से स्मृतियों का गंध धीर,

सुरभित है जीवन-मृत्यु-तीर,

रोमों में पुलकित कैरव-वन !